Dr. Becha Prasad Singh.
Associate Professor
Dept of Pol. Science
Sher Shah College, Sasaram.

B.A – III (Hons)
Paper – VI

प्रश्न → प्लेटो के आदर्श राज्य की आलोचनात्मक व्याख्या करें।

उत्तर → प्लेटो की महानतम और सर्वश्रेष्ठ कृति 'रिपब्लिक' के प्रथम अध्याय का केन्द्रीय विषय 'आदर्श राज्य' है। अपने आदर्श राज्य के भव्य भवन के निर्माण हेतु उसने न्याय सिद्धांत को आधारशिला तथा श्रम विभाजन योजना एवं साम्यवाद के सिद्धांत का आधार स्तम्भ के रूप में प्रयोग किया है। आदर्श राज्य की बागडोर एक दार्शनिक राजा के हाथों सौंपता है जो सर्वगुण सम्पन्न होता है। प्लेटो एक ऐसे आदर्श राज्य की रचना करना चाहता था जो पूर्ण रूपेण 'आदर्श मॉडल' कहे अर्थात् उसमें किसी भी प्रकार की त्रुटि न हो। राजनीतिक जीवन को आदर्श बनाने अथवा राज्य का आदर्श मॉडल निर्मित करने की उसकी इतनी तीव्र लालसा थी कि इसे व्यवहारिक बनाने लिए वह किसी तरह का समझौता करने को तैयार नहीं था। इसके सम्बन्ध में मैरिलभिय ने लिखा है कि – "रिपब्लिक में वह अपने आदर्श को किंचित मात्र भी न्यून नहीं करता, उसे केवल इस बात से सन्तोष है कि वह इसे एक आदर्श रूप में प्रदर्शित कर रहा है।"

प्लेटो के आदर्श राज्य में व्यक्ति और राज्य का सम्बन्ध :–

अपने आदर्श राज्य का निर्माण का प्रारम्भ प्लेटो व्यक्ति तथा राज्य के पारस्परिक सम्बन्धों से करता है। उसके अनुसार राज्य तथा व्यक्ति दो पर्यायवाची शब्द राज्य व्यक्ति के विराट रूप की अभिव्यक्ति है। प्लेटो का मत था कि राज्य वृक्षों तथा चट्टानों से पैदा नहीं होते, किन्तु उन व्यक्तियों के चरित्र से निर्मित होते हैं। जो उनमें निवास करते हैं। प्लेटो को राज्य की चेतना तथा व्यक्ति की चेतना में एकता का अभास हुआ है। प्लेटो की मान्यता थी कि अच्छे जीवन की प्राप्ति ही राज्य तथा व्यक्ति के जीवन का महानतम उद्देश्य है। अच्छे व्यक्तिगत जीवन के आधार पर ही एक अच्छी राजनीतिक ईकाई का निर्माण हो सकता है और अच्छे राज्य में ही अच्छे व्यक्तियों का निर्माण हो सकता है।

प्लेटो के आदर्श राज्य की उत्पत्ति :–

प्लेटो के आदर्श राज्य का निर्माण तीन चरणों में सम्पन्न हुआ है। मानव की आर्थिक आवश्यकताओं को ही राज्य की उत्पत्ति का आधार माना है। क्योंकि इसकी पूर्ति के लिए ही व्यक्ति किसी न किसी प्रकार का सहयोग करने के लिए बाध्य होता है। प्लेटो के शब्दों में "राज्य मानव समाज की आवश्यकताओं से उत्पन्न होता है ... कोई भी आत्मनिर्भर नहीं है।" इस प्रकार प्लेटो के अनुसार मानव की आर्थिक आवश्यकताएँ ही राज्य को एकता के सूत्र में बाँधनेवाले प्रारम्भिक लक्षण हैं। इकाई के रूप में कोई भी व्य

अपने आर्थिक जीवन की समस्त आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता, जब आपसी सहयोग एवं आदान प्रदान से अपनी अधिक से अधिक आव की पूर्ति कर सकता है। आर्थिक जीवन को वस्तुओं का इस प्रकार का विनिमय विभाजन तथा कार्य विभिन्नीकरण को जन्म देता है। आर्थिक आधार पर प्लेटो ने आदान प्रदान को उचित ठहराया है। इस आर्थिक पक्ष का राजनीतिक भी उसे दृष्टिगोचर हुआ है। क्योंकि कार्य विभिन्नीकरण का सिद्धांत दृष्टि में राज्य की एकता का प्रारम्भ है। प्लेटो के शब्दों में "दूसरा यह था प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे काम में लगाया जाय जिसके लिए प्रकृति ने उसका च था है। एक व्यक्ति को एक काम दिया जाय और तब प्रत्येक व्यक्ति अपना-अ स्वयं कार्य करता रहेगा।" राज्य की उत्पत्ति के प्रथम चरण में उस वर्ग का होता है जिसे प्लेटो उत्पादक वर्ग कहकर पुकारता है जिसका प्रमुख गुण सम्य तथा क्षुधा है। साथ ही प्लेटो के आदर्श राज्य के आधार स्तम्भ दो सिद्धां श्रम विभाजन का सिद्धांत तथा कार्य विभिन्नीकरण का सिद्धांत का बीजारोपण प्रथम चरण में होता है।

राज्य की उत्पत्ति का दूसरा चरण तब प्रारम्भ होता है जब प्ले उस वर्ग के निर्माण की योजना प्रस्तुत करता है जो राज्य के साहस तथा उ का प्रतिनिधि है। प्लेटो के अनुसार मनुष्य सिर्फ आर्थिक आवश्यकताओं पूर्ति करने मात्र से संतुष्ट नहीं हो जाता। वह अपनी सांस्कृतिक इच्छाओं तृप्त करना चाहता है। उसे संगीत, साहित्य, काव्य, कविता, कला आदि वस्तुओं की तृष्णा होती है। इन विभिन्न वस्तुओं की प्राप्ति हेतु अधिसंख्य लोगों का होना आवश्यक है। अधिसंख्य लोगों के निवास और भरण पोष लिए विशाल भू-प्रदेश की आवश्यकता होती है। विशाल भू प्रदेश को अधिकृत करने हेतु युद्ध होता है। युद्ध के लिए सैनिक वर्ग का उदय होता सैनिक वर्ग मानव आत्मा के साहस तत्व का प्रतीक है। सैनिक वर्ग के कार्यों यायित्वों और गुणों का विश्लेषण कर प्लेटो यह दर्शाने का प्रयास है कि किस प्रकार आत्मा का साहस तत्व आदर्श राज्य के निर्माण एवं सु में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इस प्रकार द्वितीय चरण में सैनिक वर्ग का उदय होता है जिसका मुख्य का बाहरी आक्रमण से राज्य की रक्षा करना तथा आन्तरिक शांति एवं सुरक्षा ब रखने में सहयोग देना है। प्लेटो ने सैनिकों को प्रहरी की संज्ञा दी और उनकी तुलना रखवाली करने वाले कुत्तों से की। चेतना और साहस उनके

आदर्श राज्य के निर्माण का तीसरा चरण सैनिक वर्ग में से ही प्लेटो राज्य के विवेक तत्व का प्रतिनिधित्व करने वाले सर्वोच्च वर्ग का निर्माण करता है। उसके अनुसार सैनिक वर्ग के लोगों में उत्साह तथा विवेक पाया जाता है किन्तु इनमें कुछ ऐसे होते हैं जिनमें उत्साह की अपेक्षा विवेक की अधिकता बाहुल्य होता है। ऐसे लोगों को प्लेटो ने राज्य के 'दार्शनिक राजा' माना है। प्लेटो के अनुसार शासक विवेकशील होना चाहिए एवं उसमें पर्याप्त मात्रा में स्नेहशीलता होनी चाहिए।

इस प्रकार तीन चरणों में राज्य का निर्माण, उन तीन वर्गों के क्रमशः विकास के साथ सम्पन्न होता है जो राज्य की तीन मूलभूत आवश्यकताओं – उत्पादन (Production), 'रक्षा' (Defence) तथा शासन (Rule) की पूर्ति अपने तीनों गुणों – क्षुधा (Appelite), साहस (Spirit) तथा विवेक (Reason) के आधार पर करते हैं।

आदर्श राज्य की आधारशिला :— न्याय

प्लेटो के अनुसार आदर्श राज्य की आधारशिला न्याय के सिद्धांत पर टिकी हुई है। चूँकि आदर्श राज्य में तीन वर्ग होते हैं और कार्य विभाजन एवं विशिष्टीकरण की धारणा के आधार पर इन तीनों वर्गों को अपना-अपना कार्य दूसरे के कार्य में हस्तक्षेप किये बिना करना होता है इसलिए न्याय राज्य का वह गुण है जो राज्य के वर्गीकरण की तथा कार्य विभाजन की प्रचार रूप से कायम रखता है। इस गुण की उपस्थिति के कारण ही राज्य के विभिन्न वर्ग अपने अपने कार्य क्षेत्रों तक अपनी कार्यवाहियों को सीमित रखते हुए अपनी प्राकृतिक क्षमता एवं प्रशिक्षण के आधार पर निश्चित हुए कार्य को पूरी तन्मयता एवं लगन से सम्पन्न करते हैं एवं श्रेष्ठता को प्राप्त करते हैं। प्लेटो की दृष्टि में वह राज्य न्याय पर आधारित है जिसमें नागरिक अपने-अपने निर्धारित क्षेत्रों से अपने जिम्मे के कार्य सम्पन्न करते हैं।

आदर्श राज्य के आधारस्तम्भ : शिक्षा और साम्यवाद

यदि न्याय का सिद्धांत आदर्श राज्य की आधारशिला है तो शिक्षा योजना तथा साम्यवादी व्यवस्था आदर्श राज्य के आधारभूत स्तम्भ हैं। प्लेटो ने रिपब्लिक में, शिक्षा को इतना अधिक महत्व दिया है कि कुछ ने उसे राजनीति विषयक ग्रन्थ न मानकर शिक्षा विषयक एक अत्यन्त श्रेष्ठ ग्रन्थ माना है। प्लेटो का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा व्यक्ति को एक विशेष कार्य का प्रशिक्षण देकर उसे वही कार्य सम्पन्न करते रहने की प्रेरणा देती। आदर्श राज्य द्वारा प्रदत्त शिक्षा योजना की निम्नलिखित विशेषताओं पर प्लेटो जोर देता है –

① शिक्षा राज्य द्वारा दी जानी चाहिए ② स्त्री एवं पुरुषों के लिए एक ही प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए ③ शिक्षा का उद्देश्य शरीर और मस्तिष्क दोनों का विकास होना चाहिए

(4) शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को राज्य का उत्तम नागरिक बनाना (5) शिक्षा द्वारा योग्य तथा ज्ञानी शासक अर्थात् दार्शनिक राजा तैयार किया जाना चाहिए।
साम्यवाद प्लेटो के आदर्श राज्य का दूसरा आधार स्तम्भ है। प्लेटो का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा के द्वारा नैतिक विकास कर लेने मात्र से ही आदर्श राज्य का निर्माण नहीं हो सकता। अतः साम्यवाद के द्वारा अपने आदर्श राज्य में कुछ बाह्य परिस्थितियों को जड़ मूल से नष्ट करने चाहता था जो मानव समाज के नैतिक विकास का मार्ग अवरुद्ध करने वाली उगम चुकी सिद्ध हो सकती थीं। व्यक्तिगत सम्पत्ति तथा परिवार प्लेटो को ऐसी ही विघटक चट्टाने दृष्टिगोचर हुई। अतः साम्यवाद को प्लेटो अपने आदर्श राज्य के दो वर्गों शासक तथा सैनिक तक ही सीमित रखा है। अपने व्यक्तिगत सम्पत्ति तथा अपने परिवारिक जीवन की आहुति दार्शनिक शासक वर्ग तथा सैनिक वर्ग को ही देनी थी। संक्षेप में आदर्श राज्य में प्लेटो राज्य की राजनीतिक शक्ति तथा आर्थिक शक्ति का एक ही हाथों में आ जाना किसी प्रकार से वांछनीय नहीं समझता था।

आदर्श राज्य की बागडोर :- दार्शनिक शासकों के हाथ में
प्लेटो का दार्शनिक शासक सर्वाधिक शिक्षित, सुसंस्कृत, सर्वज्ञाता, सर्वदृष्टा, विवेकशील तथा भावशील दार्शनिक शासक को आदर्श राज्य की बागडोर निर्बाध रूप से सौंप देना चाहता था। इस श्रेष्ठ मल्लाह के नेतृत्व में आदर्श राज्य की नौका आंधी और तूफानों के झंझावातों से अपनी मंजिल तक अवश्य ही पहुँच जायेगी।

आदर्श राज्य की आलोचना → प्लेटो के आदर्श राज्य की अवधारणा की डनिंग, पॉपर, रसेल आदि विद्वानों ने घोर आलोचना की है जो निम्न प्रकार है — (1) आदर्श राज्य एक स्वप्निल संसार है → आलोचकों ने आदर्श राज्य की आलोचना करते हुए एक स्वप्निल संसार कहकर पुकारा है। उसे बादलों में स्थित नगर की संज्ञा दी गई है।

(2) स्वतंत्रता का निषेध :- प्लेटो का आदर्श राज्य व्यक्तियों को आवश्यक स्वतंत्रता प्रदान नहीं करता है। वह इतना नियन्त्रणकारी है कि इसमें व्यक्तियों के सभी प्रवृत्तियों का विकास सम्भव नहीं है।

(3) उत्पादक वर्ग की उपेक्षा → प्लेटो के आदर्श राज्य उत्पादक वर्ग की घोर उपेक्षा की गयी है क्योंकि अन्य दो वर्गों के समान इनके लिए न तो शिक्षा की व्यवस्था की गयी है नहीं समाज में उन्हें महत्वपूर्ण स्थिति प्रदान की गयी है।

(4) शासक वर्ग की निरंकुश सत्ता → प्लेटो के आदर्श राज्य में कानूनों और नियमों का घोर अभाव है। इसमें दार्शनिक शासकों को निरंकुश सत्ता सौंप दिया गया है। मनुष्य को शिक्षा द्वारा कितना भी विवेकशील बना दिया जाय निरंकुश सत्ता मिलने पर वह भ्रष्ट हो जायेगा।

कानून की उपेक्षा → प्लेटो ने आदर्श राज्य में कानून की उपेक्षा बड़ी भूल की है। यही कारण है कि आदर्श राज्य की अत्यन्त कड़ी आलोचना उसके काल से लेकर आज तक की जाती रही है। उसके शिष्य अरस्तू ने कहा है कि "कानून इच्छाओं से अप्रभावित विवेक तथा महानतम विवेक सम्पन्न शासक भी कानून की उपेक्षा नहीं कर सकता।

कार्य विभिन्नीकरण की पद्धति अनुचित → प्लेटो के आदर्श राज्य का एक मुख्य आधार कार्यात्मक विशेषीकरण की पद्धति पर न्याय है। इस पद्धति के अपनाने के कारण मानवीय व्यक्तित्व का केवल एक ही विशेष पक्ष ही विकसित हो पाता है और शेष व्यक्तित्व अप्रभावित रहता है।

व्यक्ति और राज्य की समानता को अत्यधिक महत्व → अपने आदर्श राज्य में प्लेटो ने व्यक्ति एवं राज्य में जिस बड़ी मात्रा में समानता के दर्शन किये हैं, उस मात्रा में व्यक्ति एवं राज्य में समानता वास्तव में देखने को नहीं मिलती है।

शासन के लिए आवश्यक तत्वों की उपेक्षा → प्लेटो ने आदर्श राज्य में शासन के लिए अनेक तत्वों की घोर उपेक्षा की है। उनके द्वारा कानूनों, सरकारी पदाधिकारियों को दण्ड देने की व्यवस्था का कोई वर्णन नहीं किया है। इन तत्वों के अभाव में एक आदर्श राज्य का कार्य संचालन कठिन प्रतीत होता है।

इसके अतिरिक्त अरस्तू ने अपनी पुस्तक 'पॉलिटिक्स' में प्लेटो के आदर्श राज्य की धारणा की आलोचना कई बिन्दुओं पर किया।